हमारा पर्यावरण संरक्षण अभियान
(स्वच्छ पर्यावरण स्वस्थ जीवन)

भारतीय संस्कृति प्रकृति के साथ सहजीवन का ही नाम है। ऋषियों ने आरण्यकों और वनों में तपकर दिव्य ज्ञान का साक्षात्कार किया और उन्हीं के आधार पर एक प्रकृति निष्ठ समग्र जीवन शैली का विकास किया, जो कालान्तर में भारतीय संस्कृति कहलाई। उन्होंने प्रकृति – पर्यावरण के प्रत्येक घटक में अपनी ही आत्मा का विस्तार देखा और सबके संतुलित समन्वित विकास को महत्त्व दिया। पर्वत, नदी, वृक्ष–वनस्पति जीव–जन्तु, पवन–आकाश सभी को देव रूप में स्वीकारा। परोपकारी के प्रति कृतज्ञता भारतीयों का सत्य स्वभाव रहा है। इतना ही नहीं, प्रकृति को मातृवत् स्वीकार करते हुए वेद का ऋषि कह उठता है– माता पृथ्वी पुत्रोहम् पृथिव्याः। अद्‌भुत है भारतीय जीवन और उसका प्रकृति प्रेम। प्रकृति माँ का शोषण नहीं, उसका पोषण और उपभोग नहीं उपयोग की नीति विकास का आधार बनी रही। परन्तु विगत दो शताब्दियों के भोगवादी भौतिक विकास ने मनुष्य की चिन्तन शैली को बुरी तरह प्रभावित किया। त्याग की पुनीत परम्परा तो मानो लुप्त ही हो गयी। अपने लिए अधिकाधिक संग्रह की वृत्ति ने माता तुल्य प्रकृति से जो खिलवाड़ किया है, उसके परिणाम सामने हैं। ब्रह्माण्ड का सुन्दर नील ग्रह आज बुरी तरह प्रदूषण की चपेट में है।

गुरुदेव कहा करते थे– धरती माता अपने सब बच्चों की आवश्यकता पूर्ण करने की सहज सामर्थ्य रखती है, परन्तु लिप्सा एक व्यक्ति की भी पूरी नहीं कर सकती। संसार के समझदार जीव की नासमझी ने जल–थल–नभ के जीवन को भीषण संकट में डाल दिया है। साँप–छछूंदर सी स्थिति निर्मित हो गयी है। न निगलते बनता, और न उगलते। कटते वन, सूखते, प्रदूषित होते जल–स्रोत, पिघलते हिमनद, विरल होती ओजोन परत, बंजर और जहरीली होती भूमि, हवा में फैलता जहर, कानफोड़ शोरगुल, गर्म होती धरती, लुप्त होती वनस्पति–जीव प्रजातियाँ, अनावृष्टि, अतिवृष्टि, भूकम्प, सूनामी, आदि न जाने कितनी मुसीबतों के मूल में मानवीय दुर्बुद्धि जन्य मान्यताओं और धारणाओं में व्यापक परिवर्तन हेतु युग ऋषि की विचार क्रान्ति के सनातन सूत्र ही एक मुश्त समाधान सिद्ध हो सकते हैं।

उलटे को उलटकर सीधा करें और प्रकृति की ओर। गंभीरता से विचार करें और सँवारें अपने परिवेश पर्यावरण को ताकि गर्व से कह सकें, पुत्रोहम् पृथिव्याः, और बदल सकें विनाश को सृजन में।

हमारा पर्यावरण

पर्यावरण का आशय हमारे आस–पास फैले वातावरण और परिवेश से है। स्थल, जल, वायु एवं जैव मण्डल, इसके चार प्रमुख प्राकृतिक घटक हैं। प्रकृति ने इन सबके बीच एक अद्‌भुत सामञ्जस्य पैदा किया है। एक–दूसरे पर निर्भरता एवं सहयोग से परस्पर संतुलन निर्मित कर हमारे अस्तित्व को स्थिर बनाया है। तथा भगवान् का राजकुमार कहलाने वाले मनुष्य को यह दायित्व है कि वो इस संतुलन को बनाए रखने को सतत प्रयत्नशील रहे।

असंतुलन और प्रदूषण

धरती हमारी माँ है, उसके आँचल में हम सबको सुखपूर्वक रहने और पेट भरने के समस्त साधन उपलब्ध हैं, परन्तु हमने स्वार्थ, लोभ और संग्रह की हविश ने प्राकृतिक सम्पदा को अनियंत्रित दोहन और शोषण प्रारंभ कर दिया है। पृथ्वी भी हमारे जैसी ही है, जो धातुएँ, खनिज, जल, जंगल, मिट्टी आदि से बनी है। इनका दोहन उसके जैविक, रासायनिक और भौतिक संतुलन को छिन्न–भिन्न कर देता है और दोहन में उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट पदार्थ अथवा ऊर्जा पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। बढ़ती जनसंख्या और उसकी आवश्यकता पूर्ति हेतु किये जाने वाले क्रिया–कलापों से उत्पन्न अपशिष्ट उत्पादों से निकलने वाले विभिन्न द्रव्य एवं ऊर्जा के परिणाम स्वरूप जल, वायु, भूमि एवं ध्वनि प्रदूषित होते हैं।

प्रदूषण के कारक

जल प्रदूषक– मानवीय मल–मूल, उद्योगों के अवशिष्ट, खाद, कीटनाशक, डिटर्जेंट साबुन, प्लास्टिक आदि।
वायु प्रदूषक– 1. कार्बन मोनो ऑक्साइड CO, (पेट्रोल, डीजल के दहन से), 2. कार्बन डाइ आक्साइड CO_2

(लकड़ी, कोयला, ईंधन आदि के दहन से), 3. नाइट्रोजन के ऑक्साइड NO & NO_2– जीवाश्म, ईंधन आदि से। 4. ओजोन O_3, 5. क्लोरो फ्लोरो कार्बन CFC (फ्रीज, एसी आदि के उपयोग से), 6. सल्फर डाइऑक्साइड SO_2– (कोयला, ईंधन के दहन से),

ध्वनि प्रदूषक– उद्योग, मोटर वाहन, वायुयान, सायरन, हॉर्न, लाउड स्पीकर, 95 डेसीबल से अधिक ध्वनि हानिकारक है।

भूमि प्रदूषक– कीटनाशक, रासायनिक खाद, पोलीथिन, प्लास्टिक, दूषित जल की अधिकता, उद्योगों के अपशिष्टों का फैलाव।

धरती का गर्म होना और जलवायु परिवर्तन – ग्लोबल वार्मिंग आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या है। इससे मनुष्य ही नहीं, धरती पर उपलब्ध सम्पूर्ण जीवन संकट में है।

सूरज की किरणें धरती को ऊष्मा प्रदान करती हैं। ये किरणें वायुमण्डल से होते हुए धरती से टकराती हैं और परावर्तित होकर लौट जाती हैं। वातावरण में उपलब्ध ग्रीन हाऊस गैस (CH_2 मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और भाप) धरती पर आवरण बनाकर रखती है और लौटती किरणों के एक हिस्से को रोक लेती है, जिससे धरती का वातावरण गरम रहता है। परन्तु इन्हीं गैसों की अधिकता से ऊष्मा बाहर नहीं जा पाती और यही संचित ऊष्मा धरती का तापमान बढ़ाती है। इससे धरती का तापमान 1 से 2^0 सेल्सीयस बढ़ सकता है। जिसके घातक परिणाम स्वरूप ग्लेशियरों का पिघलना, जीव–वनस्पतियों की प्रजातियों का नष्ट होना, समुद्र का तल बढ़ जाना, तटीय क्षेत्रों का डूब जाना, बाढ़, तूफान, सूखा, मौसम–चक्र परिवर्तन, उत्पादन में कमी, बीमारियाँ, भूमि की उत्पादकता में कमी, ऑक्सीजन की कमी, जैव विविधता पर संकट जैसी अनेक विपत्तियाँ सामने आयेंगी। दुनिया का नक्शा बदल जायेगा।

प्रदूषण रोकने के उपाय–

1. सघन वृक्षारोपण एवं कटाई पर रोक।
2. जनसंख्या नियंत्रण।
3. वैकल्पिक ऊर्जा (सौर, जल, वायु) का उपयोग।
4. वाहनों का उचित, संतुलित उपयोग।
5. CFC उत्सर्जन पर नियंत्रण।
6. पर्यावरण अनुकूल तकनीकि प्रयोग।

ज्ञातव्य :–

* भारत में 400 अरब क्यूबिक मीटर पानी बरसता है।
* 1000 अरब क्यू. मी. का ही उपयोग हो पाता है।
* 1 मेगावाट सौर ऊर्जा से बनाने पर 20–22 करोड़ खर्च होता है।
* वायुमण्डल का 75% भाग 16 किमी. के अन्दर है।
* 1933 में विश्व जनसंख्या 2 अरब थी।
* 1941 से भारत की जनसंख्या तीन गुनी हो गयी।
* दिल्ली सबसे प्रदूषित नगर है। वाहनों के कारण 70% प्रदूषण है।
* पृथ्वी का औसत तापमान 0.3°C से 0.6°C प्रतिवर्ष बढ़ता है।
* 70% भारतीय जल प्रदूषित है।
* 75% गंदगी नदियों में नगर निगम फेल हो गया है।
* 25% उद्योगों से
* भारत का वन क्षेत्र 6.78 लाख वर्ग किमी. (20.65%)

* औषधीय पौधों की 15000 प्रजातियाँ भारत में हैं।
* 21 वीं सदी में मौजूदा प्रवृत्ति जारी रही तो तापमान 3.5°C से 10°C बढ़ जायेगा।
* समुद्र का औसत स्तर 9 से 88 सेमी. तक बढ़ने की संभावना है।
* दुनिया की आधी आबादी जो तट से 60 किमी दूर तक रहती है, प्रभावित होगी।
* हिमनद हिमालय 1962 से 2000 के बीच 16% घटे हैं।
* कश्मीर में कोल्हाई हिमनद 23 मी. प्रति वर्ष पिघल रहा है। गंगा, यमुना, झेलम, चिनाव, बाँज, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, रावी सूख जायेंगी।
* पिछले 100 वर्षों में अंटार्कटिका का तापमान में दोगुनी वृद्धि हुई है।

* * * * * * * * *

पर्यावरण संरक्षण हेतु हमारे तीन अभियान

1. वृक्ष गंगा अभियान
2. भागीरथी जलाभिषेक अभियान
3. ग्राम-तीर्थ स्वच्छता अभियान

1. वृक्ष गंगा अभियान-

उद्देश्य - एक करोड़ वृक्ष लगाएँ, इस धरती को स्वर्ग बनाएँ।

प्रकृति माता के अनुदान पाएँ, आपदाओं को दूर भगाएँ॥

लक्ष्य - सम्पूर्ण देश में एक करोड़ वृक्षों का रोपण एवं पुत्र/मित्र बनाकर उनका पालन। इसके अंतर्गत 1008 श्रीराम स्मृति उपवनों की स्थापना।

वर्ष 2012-14 युगऋषि का जन्म शताब्दी वर्ष के अनुयाज के रूप में विश्व भर में आयोजित किया जा रहा है। वे करोड़ों के सद्गुरु, पिता एवं मार्गदर्शक हैं। उनका आश्रय पाकर अनेक देव आत्माऐं स्वयं को बदलकर संसार को स्वर्ग जैसा सुन्दर बनाने में निष्काम भाव से संलग्न हैं। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्डया जी ने जन्म शताब्दी वर्ष के वासन्ती संदेश में 1 करोड़ वृक्षों के रोपण - पालन का संकल्प हम सबकी ओर से किया है। शताब्दी पुरुष को उनकी जन्मशती पर दी जाने वाली सार्थक श्रद्धांजली होगी। आओ सब मिलकर अपने संकल्प को पूर्ण करें।

वृक्ष कहाँ व कैसे लगायें-

1. सूखी पहाड़ी पर तरुपुत्र यज्ञ कराकर संकल्प पूर्वक वृक्षारोपण कर स्मृति उपवन बनाना।

2. शहर में उजड़े उद्यान गोद लेकर उन्हें विकसित करना, स्मृति उपवन बनाना।

3. नदियों को हरी चूनर (तटों पर भूमि क्षरण रोकने वाले एवं औषधीय वृक्षों का रोपण करना) चढ़ाना।

4. मंदिरों/उद्यानों में नक्षत्र वाटिका, राशि वाटिका, ग्रह वाटिका, वास्तु वाटिकाओं का निर्माण।

5. प्रत्येक शक्तिपीठ पर उपरोक्त वाटिकाओं का निर्माण।

6. मंदिरों में पर्यावरण शुद्धि हेतु त्रिवेणी (पीपल, बरगद, नीम) अथवा पंचवटी (नीम,

पीपल, बरगद, जामुन, आँवला) रोपण, हरि शंकरी (पीपल, बरगद, पाकड़) का रोपण।

7. प्रत्येक गाँव के देव स्थान/वन गोचर, बंजर भूमि में 51 पौधों का रोपण।

8. प्रति विद्यालय जहाँ (भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन होता है) में 24 पौधों का

रोपण, तरुमित्र योजना।

9. एक परिजन – एक तरु/पौधा/वृक्ष लगायें तो भी सहजता से लक्ष्य पूर्ण हो जाएगा।

10. तरुपुत्र /तरुमित्र का संकल्प लें।

11. राष्ट्रीय/राज्य राजमार्गों के किनारे (फलदार/छायादार वृक्ष) वृक्षारोपण।

12. श्मशान घाट पर (पर्यावरण संवर्धन, धार्मिक महत्त्व वाले व छायादार वृक्ष) वृक्षारोपण।

13. खेतों की मेढ़ों पर फलदार एवं कृषि उपयोगी/व्यावसायिक लाभकारी पौधों का रोपण।

14. तकनीकि/प्रबंधन/चिकित्सा/अन्य महाविद्यालयों के परिसरों में सम्पर्क कर वृक्षारोपण करें।

15. जन्मशताब्दी वर्षों में आयोजित किये जाने वाले सभी यज्ञ अथवा दीप यज्ञों में वृक्षों के तैयार पौधे प्रसाद रूप में संकल्प पूर्वक वितरित किये जायें तथा प्रत्येक कार्यक्रम में इस हेतु लक्ष्य निर्धरित करें।

16. गुरुदेव के द्वारा लगाई नीम के बीज के पौधे तैयार किये जायें और वितरित किये जायें।

17. आँवलखेड़ा पूज्य गुरुदेव का जन्मस्थान है, इसलिये आँवले के पौधे तैयार किये जायें और कार्यक्रम प्रसाद रूप में वितरित किये जायें।

18. केन्द्र से दिये जाने वाले समस्त कार्यक्रम एवं उस हेतु जाने वाली समस्त टोलियाँ वृक्षारोपण का प्रचार–प्रसार करें।

19. शान्तिकुञ्ज में शिविरार्थियों तथा तर्पण संस्कार में आये लोगों को वृक्ष संकल्पपूर्वक वितरित किये जायें।

भूमि, साधन एवं पौधे कहाँ से प्राप्त करें –

1. ग्रामीण क्षेत्र में भूमि पर वृक्षारोपण हेतु संबंधित पटवारी से उस स्थान का खसरा निकलवायें। तत्पश्चात् उस भूमि पर वृक्षारोपण हेतु ग्राम पंचायत में प्रस्ताव पास करवाकर वृक्षारोपण करें, जिसमें पंचायत का सहयोग भी लिया जाये।

2. रोड के दोनों ओर वृक्षारोपण हेतु पंचायत द्वारा तार फेन्सिंग करवाकर वृक्षारोपण करें, जिन्हें पालने की जिम्मेदारी आस – पास के दुकानदारों या रहवासियों को दी जा सकती है।

3. रेलवे के भूभाग पर वृक्षारोपण करने के लिए रेल विभाग से अनुमति व सहायता ली जा सकती है।

4. विद्यालयों मे ईको क्लब द्वारा प्रति वर्ष राशि माध्यमिक, हाईस्कूल व हायर सेकेन्ड्री शालाओं को प्राप्त होते हैं। प्राचार्य से चर्चा कर विद्यालयों में तरुमित्र योजना द्वारा विद्यार्थियों को पर्यावरण आन्दोलन से जोड़कर पौधारोपण कर उनके संरक्षण का दायित्व विद्यार्थियों को दिया जाए।

5. नगरीय क्षेत्रों में नगर पालिक निगम या नगर पंचायत से ट्री-गार्ड की व्यवस्था बनवाई जा सकती है।

6. सस्ते बाँस खरीद कर तीकोन बना बाँस की चिपली से भी सस्ते ट्री-गार्ड बनवाये जा सकते हैं।

7. राष्ट्रीकृत बैंक/बीमा/पेट्रोलियम कम्पनी भी वृक्षारोपण हेतु ट्री गार्ड व साधन उपलब्ध करवाती है, उनसे भी इस कार्य हेतु सहयोग लिया जा सकता है।

किसी को हमारा स्मारक बनाना हो तो वह वृक्ष लगाकर बनाया जा सकता है। वृक्ष जैसा उदार, सहिष्णु और शांत जीवन जीने की शिक्षा हमने पाई। उन्हीं जैसा जीवन क्रम लोग अपना सकें तो बहुत है। हमारी प्रकृति, जीवन विद्या और मनोभूमि का परिचय वृक्षों से अधिक और कोई नहीं दे सकता, अतएव वे ही हमारे स्मारक हो सकते हैं।

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

वृक्ष हैं, तो जल है और जल है तो जीवन है। जल ही नहीं, तरु भी जीवन है।

मित्र या पुत्र बनकर करें वृक्षों की सेवा।

''जल ही जीवन है।'' यह कहावत बहुत लोकप्रिय है। शुद्ध जल का नितांत अभाव होता जा रहा है। लोगों को पीने का जल उपलब्ध नहीं हो रहा। धरती का जल स्तर लगातार घटता जा रहा है। किसानों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध नहीं हो रहा। जिस जल से खेती की जाती है, आज उसी जल की खेती करने पर जोर दिया जा रहा है। जल को बचाने के लिए नित नयी योजनाएँ बन रही हैं, अरबों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। ग्लेशियर पिघल रहे हैं, नदियों का अस्तित्व खतरे में है। किन्तु क्या हम जानते हैं कि इतने बड़े जल संकट का मुख्य कारण क्या है ? इसका मुख्य कारण है- कटते वन, घटती हरियाली। पेड़ नहीं रहेंगे तो जल कैसे उपलब्ध होगा ? इसलिये यह कहना कि जल ही नहीं, तरु भी जीवन है। उचित ही कहा जा सकता है।

वृक्षों के अभाव में केवल जल संकट ही नहीं पैदा हुआ, उसके कारण न जाने कितने संकट खड़े होते जा रहे हैं। पर्यावरण संतुलन पूरी तरह से चरमरा गया है। मौसम का कोई ठिकाना नहीं। धरती का तापमान निरंतर बढ़ रहा है। यदि वृक्षों के उपकारों पर दृष्टि डाली जाये तो पता चलता है कि जैसे-जैसे हरियाली घटती जा रही है, मानव जीवन के अस्तित्व का खतरा भी बढ़ता जा रहा है।

बिना वृक्ष-वनस्पतियों के जीवन असंभव सा है। उनकी इतनी ही महत्ता को देखते हुए हमारे आर्ष ग्रन्थों में वृक्ष लगाना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। इस पुण्य की व्याख्या करते हुए शास्त्रों में लिखा है-

दश कूप समो वापी, दश वापी समो ह्रदः।
दश ह्रदः समः पुत्रः, दशपुत्र समो द्रुमः॥

अर्थात्- एक पेड़ को पाल-पोसकर बड़ा करने, उसकी सेवा करने का पुण्य दस पुत्रों के लालन-पालन के समान पुण्यदायी अथवा सौ सरोवर बनाने के समान पुण्यदायी अथवा एक हजार वापियों (बड़े कुएँ) अथवा दस हजार कुएँ बनवाने के समान है।

आज वृक्षारोपण केवल पुण्यदायी कर्म ही नहीं, एक राष्ट्रधर्म के रूप में देखा जाना चाहिए। धरती माँ का आँचल सूना होता जा रहा है। उन्हें हरियाली की चूनर पहनाने वाले श्रवण कुमारों की आवश्यकता है। राष्ट्ररक्षा के लिए न जाने कितने संघर्ष चल रहे हैं। उनमें से सबसे बड़ी आवश्यकता है, पर्यावरण संरक्षण की।

हम तरुमित्र या तरुपुत्र बनकर वृक्षों की सेवा करें तो अक्षय पुण्य के भागीदार बन सकते हैं। एक मित्र धोखा दे सकता है या अपना पुत्र खोटा निकल सकता है, लेकिन अपने द्वारा लगाया गया वृक्ष तो जीवन भर हमारी

सेवा ही करेगा। वह जब तक रहेगा, हमें देता ही रहेगा, भलाई ही करेगा। वृक्षों में देवताओं का वास होता है। उनकी सेवा से निश्चित रूप से देवता प्रसन्न होकर अनुदान-वरदान देते हैं।

वृक्षों के हैं उपकार अनेक

आहार- जब तक शरीर में प्राण है, तब तक जीवन है। वैसे तो प्राणों के अधिष्ठाता भगवान भास्कर हैं, लेकिन धरती और सूर्य की ऊर्जा के संयोग से उन प्राणों को प्रोटीन, विटामिन, चिकनाई, कार्बोहाइड्रेट आदि जीवनावश्यक तत्त्वों को आहार के रूप में बदल कर हम तक पहुँचाते हैं, वृक्ष-वनस्पतियाँ। अन्न, फल, फूल, औषधियाँ वृक्षों से ही मिलते हैं।

जल- जीवन के लिए दूसरा परम आवश्यक तत्त्व है जल। सूर्य जल को तपाकर बादल बनाता है, तो हरियाली उसे सोखकर पूरे विश्व में बरसाती है। हरियाली ही जल चक्र का मुख्य घटक है। जहाँ वृक्ष हैं, वहाँ वर्षा है, वहाँ जल है, फसल है।

नदियों का प्रवाह पेड़ों के कारण ही अविरल रहता है। पेड़ों की जड़ें वर्षा जल को सोखकर धीरे-धीरे विसर्जित करती हैं, जिससे कुएँ, तालाब, नदियों का जीवन बढ़ता रहता है। हरियाली घटी तो नदियाँ सूखने लगीं, धरती का जल स्तर निरंतर नीचे गिरता गया।

वायु- एक वृक्ष ही हैं, जो शिवरूप होकर जहर पीते हैं और अमृत के रूप में ऑक्सीजन विसर्जित करते हैं। बाकी तो चाहे मनुष्य हो या प्राणी, या वाहन, कल-कारखाने, सभी तो बस जहर ही जहर उगल रहे हैं। वृक्षों के घटते जाने से ही पर्यावरण निरंतर जहरीली गैसों से भर रहा है। नगरों में तो पर्यावरण इतना दूषित है, कि साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है। तरह-तरह के रोग बढ़ रहे हैं, जीवन दम तोड़ रहा है। यदि वृक्ष नहीं रहे, तो जीवन भी नहीं रहेगा।

आश्रय- आज कांक्रीट के जंगल बढ़ते ही जा रहे हैं। एक समय था, जब वनस्पतियाँ आश्रय का मुख्य आधार थीं। लकड़ी की झोंपड़ी होती थी और पक्के मकानों में भी लकड़ी की ही अहम् भूमिका होती थी। आज लकड़ी घट रही है, प्लास्टिक बढ़ रहा है और उसी अनुपात में बढ़ रहा है, पर्यावरण संकट। इसका कारण है, वृक्षों का घटना।

पशु-पक्षी- प्रतिदिन पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों की सैकड़ों प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। वे जिन पेड़ों से भोजन पाते थे, जिनके बीच रहते थे, अपना आशियाना बनाते थे, उनका ही अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है, तो पशु-पक्षी, कीड़े कैसे बचेंगे। ध्यान रहे कि इन पशु-पक्षियों और कीड़े-मकोड़ों की भी पर्यावरण संतुलन में बहुत बड़ी भूमिका होती है।

अन्य- इसके अलावा भी छाया, औषधि, ईंधन, न जाने कितने रूपों में वृक्ष हमारी सेवा करते हैं, सृष्टि का संतुलन बनाये रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। यदि वृक्ष नहीं रहे, तो हम भी नहीं रहेंगे। धरती का सौन्दर्य प्रदान करने वाले वृक्ष ही तो हैं।

प्रत्यक्ष देवता हैं वृक्ष

कई धर्मों में वृक्षों को देवता के रूप में पूजा जाता है। देवता वे होते हैं, जो देते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो वृक्षों का हर क्षण पग-पग पर उपकार है। वृक्ष हमारे प्रत्यक्ष देवता हैं। ऋषि-मनीषियों ने इसीलिए वृक्षों की पूजा करने का विधि-विधान निर्धारित किया है।

तुलसी स्वास्थ्य की दृष्टि से अमृततुल्य है, इसीलिए हर रोज तुलसी के थाँवले पर दीपक जलाकर प्रार्थना करने और जल देने का विधान है।

पीपल देववृक्ष है। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है-''वृक्षों में मैं पीपल हूँ।'' पीपल, बड़ की तरह ही अलग-अलग पर्वों पर अलग-अलग वनस्पतियों के पूजन का विधान है। पूजन का अर्थ है, उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना। उनके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करना।

और गहराई में जायें तो देखेंगे कि हरियाली के अभाव के मनोवैज्ञानिक प्रभाव से मनुष्य की संवेदना भी घटती जा

रही है। भले ही यह तथ्य आज के विद्वानों के मन-मस्तिष्क में अब तक नहीं उठा हो, लेकिन घटती मानवीय संवेदना, सहिष्णुता, समृद्धि, और बढ़ती क्रूरता, अत्याचार, अशान्ति का कारण हरियाली का निरंतर कम होते जाना भी है।

संत और पेड़ एक समान

संतों का जीवन कैसा होता है, यह जानना हो तो वृक्षों को देखिये। देना, देना, बस देना। यही होता है संतों और पेड़ों का स्वभाव। पेड़ों की उदारता, उनके जैसी सहनशक्ति, संतों का स्वभाव होता है। उनका हर अंग उपयोगी है। किसी के प्रति उनका कोई भेदभाव नहीं होता। लोग उन्हें पत्थर मारते हैं, वृक्ष बदले में फल देते हैं। लोग कुल्हाड़ी चलाते हैं, वे लकड़ी देते हैं। लोग आग लगाते हैं, वे ऊष्मा देते हैं। संतों का भी यही स्वभाव होता है। उनका सारा जीवन दूसरों के कल्याण के लिए होता है। इसीलिए युगऋषि आचार्य श्रीराम शर्मा जी का कहना है कि यदि कोई उनका स्मारक बनाना चाहें, तो पेड़ लगायें। वही उनके सच्चे स्वरूप को दर्शाते हैं।

वृक्षारोपण के विविध अभियान

गायत्री परिवार द्वारा युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में एक करोड़ वृक्ष लगाने का संकल्प लिया गया था। अब तक 60 लाख से अधिक वृक्ष लगाये जा चुके हैं, शेष इस वर्ष लगाये जायेंगे।

गायत्री परिवार के विभिन्न संगठन, विद्यालयों, सार्वजनिक स्थलों, रास्ते के दोनों किनारों, खेत की मेंढ़ों आदि पर यह वृक्षारोपण कर रहे हैं। विद्यार्थियों में विशेष तौर पर जागरूकता लाते हुए उनसे वृक्षारोपण कराया जा रहा है। पर्यावरण के प्रति निरंतर जागरूक हो रही युवा पीढ़ी इस अभियान में पूरे जोरशोर से जुटी है।

श्रीराम स्मृति उपवन :- आचार्य जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में ही 1008 श्रीराम स्मृति उपवन लगाये जा रहे हैं। ये बड़े आकार के होते हैं। एक्यूप्रेशर मार्ग, प्राकृतिक आहार, पक्षी आहार गृह, साधना केन्द्र, औषधि वाटिका, ग्रह-नक्षत्र-राशि वाटिकाएँ, जैसी शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्यवर्धक रचनाएँ इन्हें जोड़ी जा सकती हैं। शान्तिकुञ्ज हरिद्वार स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय में इसका एक प्रारूप तैयार किया गया है, जिसे देखकर जगह-जगह ऐसे उपवन लगाये जा रहे हैं।

श्रीराम स्मृति वन-पर्वत :- मध्यप्रदेश सहित अनेक प्रान्तों में कई पहाड़ियों/भूखण्डों को गोद लेकर गायत्री परिवार की स्थानीय शाखाओं ने उन्हें हरा-भरा बना दिया है। सरकार से अनुमति और सहयोग लेकर ऐसे प्रयास हर क्षेत्र में किये जा सकते हैं।

श्रीराम स्मृति वाटिकाएँ :- हर गाँव, हर घर में हरीतिमा संवर्धन हो, ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं। गाँवों में छोटे क्षेत्र में कुछ वृक्ष लगाकर ऐसी वाटिकाएँ बनायी जा सकती हैं, जहाँ स्वास्थ्य संवर्धन, बच्चों के खेलने, संस्कार-साधना आदि की सुविधा उपलब्ध हो सके। गाँव-शहर के उन घरों में जहाँ वृक्ष लगाना संभव नहीं है, वहाँ गमलों में भी शाक वाटिका, औषधि वाटिका लगाकर हरियाली बढ़ाई जा सकती है। ऐसे प्रयोग आर्थिक दृष्टि से भी लाभदायक होंगे और शुद्ध शाक भी उपलब्ध हो सकेंगे।

* * * * * * * * *

वृक्ष गंगा अभियान

तरुपुत्र महायज्ञ कर्मकाण्ड

तरुपुत्र महायज्ञ माहात्म्य:-पर्यावरण और अध्यात्म दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है। ऋषियों के समय में यह सम्बन्ध अविच्छिन्न बना रहा, इसी कारण कभी भी दैवी आपदाएँ-प्राकृतिक विभीषिकाओं की बहुलता नहीं रही। हमारे ऋषिगण विश्वराष्ट्र की बात कहते थे एवं उसे पुष्ट बनाने का निर्देष देते थे। ''माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:'' के रूप में इकॉलोजी का एक अति महत्वपूर्ण सूत्र हमें ऋषिगणों ने दिया। आज चारों ओर वृक्षों का विनाश हो रहा है, इसी कारण सभी प्रकार की विपत्तियाँ हम पर बरस रही हैं। भूमि का कटाव, उपजाऊ मिट्टी का क्षरण होकर उसका समुद्र में बहकर चले जाना एवं क्रमश: कवच हटते चले जाने से पृथ्वी का तापमान बढ़ना इसी कारण हैं। जब तक हम पर्यावरण के प्रति आध्यात्मिक दृष्टि नहीं अपनाते, तब तक अपना अस्तित्व सुरक्षित नहीं रख सकते।

एक वृक्ष दस पूत समाना

हमारी संस्कृति में परोपकार भाव की जड़ें इतनी गहरी रही हैं कि व्यक्ति कामना करता है कि मरने के बाद उसका वंश भी यज्ञ की आहुति के रूप में अर्पित हो और उसकी हर संतति परोपकार में निरत रहे। उसकी संपत्ति भी परोपकार में लग जाये। इस क्रम में उसकी सबसे बड़ी अपेक्षा जीवन की सबसे बड़ी कृति से होती है, इसीलिए वह पुत्र को परोपकारमय जीवन जीने के लिए संस्कार और साधन उपलब्ध कराता है। इतने प्रयासों के बाद भी यदि पुत्र यज्ञमय जीवन नहीं जी पाता तो पिता की आत्मा को पीड़ा होती है जो उसकी सद्गति में बाधक होती है। ऐसी दशा में ऋषियों ने पौधो को पुत्र रूप में धारण कर पाल-पोस, सेवा कर बड़ा बनाने का विधान बताया है। तरुपुत्र अर्थात् पुत्र के रूप में अपनाया गया तरु। जो वृक्ष रोपणकर्त्ता को नरक से पार करे, उसे तरु कहते है और जो सन्तान माता-पिता की नरक से रक्षा करे, उसे पुत्र कहते हैं। अनेक वृक्ष ऐसे हैं, जो छोटे-बड़े लाखों जीवों को भोजन, छाया, शरण और संतुलित पर्यावरण देकर प्रतिदिन बहुत बड़ा पुण्य करते हैं। ऋषियों के अनुसार यह पुण्य उस वृक्ष का रोपण, रक्षा व सेवा करने वाले को मिलता है। व्यक्ति की अपनी सन्तान विरले ही उतना पुण्य कर पाती है, जितना कि एक वृक्ष अपने जीवन काल में करता है। शास्त्रीय मान्यता यह भी है कि पाप करने वाली सन्तान के पापों से पितर घोर नरक में जाने को बाध्य होते हैं, इसलिए ऋषियों ने नरक से मुक्ति दिलाने के लिए वृक्ष को पुत्र के रूप में ग्रहण करने का विधान बताया है। तरुपुत्र रोपण महायज्ञ द्वारा नन्हे पौधे को वैदिक मंत्रो के साथ पुत्र रूप में वरण करने का विधान है। अत: आइये श्रद्धा के साथ माँ वसुंधरा की साक्षी में तरुपुत्र रोपण महायज्ञ द्वारा नन्हें पौधे को पुत्र के रूप में वरण कर उसके पालन, पोषण का संकल्प लें।

आवश्यक सामग्री - (एक कुंड हेतु) गाय के छोटे 5 उपले (छोटी प्लेट के आकार के) 10 ग्राम हवन सामग्री, कपूर, पूजन सामग्री, अक्षत, कलावा, जल, घी की बत्ती, एक दोने में फूल, अगरबत्ती, माचिस, कलावा। (अग्नि के स्थान पर अगरबत्ती का उपयोग भी किया जा सकता है।)

आह्वान -: देव तुल्य आत्मीय बन्धुओ! ईश्वर की योजना व ऋषियों के संकल्प में तरुपुत्र महायज्ञ के इस आयोजन के माध्यम से धरती माता को हरी चूनर ओढ़ाने का दिव्य अवसर हमें प्राप्त हुआ। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि विषपायी शिव को पुत्र के रूप में वरण करने का हमें सौभाग्य मिल रहा है। इस कार्यक्रम में जिस किसी का भी समय, साधन, प्रतिभा पर्यावरण के विश्वव्यापी संकटों के निवारण हेतु लगा है, उनका पुरुषार्थ इतिहास में सदैव 'श्रीराम स्मृति उपवन' के रूप में जीवन्त रहेगा।

कर्मकाण्ड

1- मंगलाचरणम्-

व्याख्या - धरती माता की गोद व नीले गगन की छाया में उपस्थित सभी भाई बहिनों पर अक्षत पुष्प की वर्षा की जा रही है। भावना करें कि इस वर्षा द्वारा सभी युग सृजन साधकों पर प्रकृति माता का अनुग्रह बरस रहा है।

क्रिया - निर्धारित स्वयं सेवक बैठे हुए सभी याजकों पर वैदिक मंत्र के साथ पीले अक्षत की वर्षा करें।

मंत्र - **ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा, भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।**

स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिः, व्यशेमहि देव हितं यदायुः।।

2- पवित्रीकरणम्-

व्याख्या - भावना करें कि जिस वीरान उजड़े पहाड़/क्षेत्र पौधरोपण हो रहा है, उस पौधे में त्रिदेव का वास मान कर एक तरुमंदिर की स्थापना हो रही है। जिस स्थान पर ये रोपित हो रहे हैं, उस स्थान का कण-कण शुभ और देव संस्कार से जागृत हो रहे हैं। यह पावन धरती माता वृक्ष देवता को अपनी गोद में पुत्र की तरह पालन-पोषण करे। साथ ही इस स्थान के कुसंस्कारों का निवारण होकर आने वाले समय में रोपित सारे पौधे वन का रूप लेकर सदैव पर्यावरण संतुलन का क्रम बनाए रखेंगे, इस भाव के साथ जल-सिंचन संपन्न करें।

क्रिया - स्वयं सेवक पात्रों में रखे जल का पुष्प या आम के पत्तों द्वारा सभी यजमान एवं पौध रोपण स्थान पर सिंचन करें। मंत्रपूरित जल सिंचन के समय सभी भाई-बहिन हथेली आकाश की ओर खोल कर भावना करें कि पवित्रता हमें महान् बना रही है।

मंत्र – **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु। –वा०पु० ३३.६

3–पृथ्वी पूजनम् –

व्याख्या – जहाँ से हम अन्न, जल, वस्त्र, पेड़–पौधे व दिव्य वनस्पती प्राप्त करते हों, जिसकी गोद में हम पलते एवं बड़े होते हैं, ऐसे सन्तों, सुधारकों और षहीदों की इस पावन माटी को नमन–वंदन करें। रोपित तरु को धरती माँ अपनी गोद में पालन–पोषण कर संपूर्ण विष्व मानवता को दिव्य प्राण का प्रवाह बिखेरती रहें, इस भाव से माँ पृथ्वी का पूजन करें।

क्रिया – पुत्रवत् भावना से आपके पास रखे हुए दोनों से अक्षत–पुष्प लेकर धरती माता का पूजन करें।

मंत्र – **ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता।**
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरु चासनम्।।

4. संकल्प – सभी भाई–बहिन अपने दाहिने हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर तरुपुत्र महायज्ञ का संकल्प ग्रहण करें। संकल्प से मन की समस्त शक्तियाँ केन्द्रित होती हैं। इस महायज्ञ से कितने ऊँचे उद्देश्य जुड़े हैं, इस पर भी ध्यान दें।

संकल्पः – **ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य, अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्तैक देशान्तर्गते, ... क्षेत्रे, मासानां मासोत्तमेमासे, ... मासे, ... पक्षे, ... तिथौ, ... वासरे, ... गोत्रोत्पन्नः, ... नामाहं सत्प्रवृत्ति संवर्धनाय, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलनाय, आत्मकल्याणाय, लोककल्याणाय, वातावरण परिष्काराय, प्रदूषण उन्मूलनाय, पर्यावरण संवर्धनाय, उज्ज्वल भविष्य कामना पूर्तये च प्रबल पुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च कलशादि आवाहित देवता पूजनपूर्वकम् तरुपुत्र महायज्ञ सम्पादनार्थं संकल्पम् अहं करिष्ये।**

5. कलश–वरुण पूजनम् –

व्याख्या– कलश विश्व ब्रह्माण्ड का प्रतीक है, भगवान् का साकार रूप भी यही है। यह सम्पूर्ण दृश्य जगत् ही जगदीश है। कलश के ऊपर रखे पंच पल्लव वृक्ष वनस्पति का प्रतीक है। अन्दर का जल नदियों – सागर के जल का प्रतीक है। नारियल पूर्णता का प्रतीक है। प्रकृति का पूर्ण संतुलन बने, इस भाव से समस्त देवी–देवताओं का कलष के मध्य ध्यान करें।

क्रिया – मुख्य यजमान अपने दाहिने हाथ में अक्षत–पुष्प लें। मंत्र पूरा होने पर कलष के ऊपर चढ़ा दें। शेष सभी भाई–बहिन अपने हृदय में अपने इष्ट देव का ध्यान करें।

मंत्र – **ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। वरुणेह बोध्युरुषꣳ समानऽ आयुः प्रमोषीः। ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामोऽम् प्रतिष्ठ।**

ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

गंधाक्षतम्, पुष्पाणि, धूपम्, दीपम्, नैवेद्यम् समर्पयामि। ॐ कलशस्थ देवताभ्यो नमः।

देव आवाहनम् –

6. गुरु आवाहनम् – गुरु परमात्मा की विशेष दृश्यमान् शक्तिधारा है, जो हमें सतत आत्म कल्याण एवं लोक कल्याण की सेवा–साधना के लिए प्रेरित करती रहती है। वह गुरु सत्ता हमें सतत प्रेरणा एवं शक्ति देती रहे, हमारे मन की वृत्तियाँ भी उनके अनुकूल बनी रहें। ऐसी प्रार्थना के साथ उनका भावभरा आवाहन करते हैं।

क्रिया – सभी भाई–बहिन अपने दाहिने हाथ में अक्षत–पुष्प लें। अपने हृदय में अपने गुरु देव का ध्यान करें। मंत्र पूरा होने पर कलश के ऊपर उसे चढ़ा दें।

मंत्र – **ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।**

गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
मातृवत् लालयित्री च, पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोस्तु गुरुसत्तायै, श्रद्धा प्रज्ञा युता च या।।

ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

7. गायत्री आवाहनम् – गायत्री परमात्मा की मूल शक्ति है। वह परम शक्ति हमें सद्बुद्धि, सद्विचार एवं सद्भाव से भरती रहे, इस भाव के साथ उनका आवाहन करें।

क्रिया – सभी भाई–बहिन अपने दाहिने हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर माँ गायत्री का ध्यान एवं पूजन करें।

मंत्र – **ॐ आयातु वरदे देवि, त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।**
गायत्रिच्छन्दसां मातः, ब्रह्मयोने नमोस्तुते।।

ॐ श्री गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

8. सूर्य आवाहनम् – सूर्य ही हमारे प्राणों के आधार हैं। सम्पूर्ण वृक्ष, वनस्पतियों, जीव जगत् एवं मनुष्यों को प्राणों का पोषण सूर्य से ही मिलता है। जगदात्मा सूर्य हमें बलपूर्वक सन्मार्ग की ओर बढ़ाएँ, एवं सुप्रेरणाएँ प्रदान करें। इस भाव से उनका भाव भरा आवाहन करें।

क्रिया – सभी भाई–बहिन अपने दाहिने हाथ में अक्षत–पुष्प लें। अपने हृदय में अपने सविता पिता का ध्यान करें। मंत्र पूरा होने पर कलश के ऊपर उसे चढ़ा दें।

मंत्र – **ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि, तन्नः सूर्य प्रचोदयात्। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद्भद्रं तन्नऽ आ सुव।**

ॐ सूर्याय नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

9. तरु पुत्र वरण एवं पूजनम् –

व्याख्या – भाईयो–बहिनो! विष्णु स्मृति में तरुपुत्र का विधान मिलता है, जिसमें ऋषि कहते हैं, जो कोई वृक्षारोपण करता है, उसके द्वारा रोपित वृक्ष परलोक में पुत्र होते हैं। वृक्ष अपने फूलों से देवताओं को प्रसन्न करता है। मेघ के बरसने पर छाते की तरह अभ्यागतों को तथा जल से पितरों को प्रसन्न करता है। अतः आइये पुत्रवत् भाव से तरु का पूजन करें।

क्रिया – सभी याजक पौधे को पुत्रवत् गोद में रख लें। अक्षत–पुष्प और इस क्षेत्र की पावन रज हाथ में ले, अपने विवाह दिवस, जन्म दिवस तथा अपने पुरखों की पुण्यतिथि का स्मरण करते हुए तरुपुत्र का आह्वान करें। मंत्र के बाद अक्षत पुष्प और रज अर्पित कर तरुदेव का आवाहन – पूजन करें। आचार्य तरुपुत्र भाव का जागरण करें। तरु महिमा गायें।

मंत्र–: **ॐ मूले ब्रह्मा त्वचा विष्णुः, शाखाः रुद्रो महेश्वरः।**
पत्रे पत्रे देवानां, वृक्ष राजाय नमोस्तुते।।
दश कूप समो वापी, दश वापी समो हृदः।
दश हृद समः पुत्र, दश पुत्र समो द्रुमः।।

10. तरु मिलन– पौधे को हृदय से लगायें और नेत्र बन्द कर वृक्ष के उपकारों का निम्नलिखित भाव अनुसार स्मरण करें। हे मेरे प्यारे तरु! प्यारे मित्र जब मैं माँ के गर्भ में आया और तीन का हुआ था कि आचार्य जी ने मेरा पुंसवन संस्कार कराया, तब तूने ही अपनी नन्हीं–नन्हीं कोपलों और जड़ों से औषधि बनाकर कर माँ के उदर में ही मुझे आरोग्य प्रदान किया था। मेरे सखा जब मेरा जन्म हुआ, तो प्रथम बार तूने ही पलना बनकर मुझे थामा था। घुट्टी बनकर तूने ही मुझे पुष्ट बनाकर रोगों के आक्रमण से बचाया था। मैं तेरे उपकार कैसे भूल सकता हूँ। मेरे भाई जब मैंने चलने की इच्छा जागी तो तूने ही तीन चक्के की गाड़ी बनकर मुझे सहारा दे कदम–कदम चलना सिखाया था। मेरे प्यारे दोस्त, तू ही मेरे खिलौने बना। मैं जब

स्कूल पढ़ने गया तो तू ही मेरी पट्टी बना, और मेरे सुख के लिए कुर्सी टेबिल बना। मैं तेरे उपकार कैसे कहूँ, प्रिय जब मेरा विवाह हुआ तो तू ही मेरे मण्डप के चार खम्भे और छाज बना और तेरी ही जलती अग्नि के फेरे लेकर मैंने अपने जीवन साथी का हाथ थामा था। मेरी गृहस्थी का तू ही तो सहारा बना, मेरे घर का दरवाजा तू, छप्पर तू, खाट तू, साजो सामान तू बना। मेरे प्यारे, तेरे ही फलों रसों से मेरा यौवन खिलता रहा। तेरे उपकार अनन्त हैं, मित्र आज भी तू मेरे साथ है और कल भी रहेगा। मैं जानता हूँ प्रिय पुत्र, जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा, भले ही सब साथ छोड़ दें, पर तू ही मेरी झुकी कमर का सहारा बन मुझे कदम-कदम मंदिर-मंदिर, तीर्थ-धाम करायेगा। और मैं यह भी जानता हूँ, मेरे देवता, जब मैं अशक्त हो जाऊँगा, तो तू ही खटिया बन मुझे आश्रय देगा और जब इस दुनिया से विदा लूँगा। पत्नी, बच्चे, नाते-रिश्तेदार सब साथ छोड़ देंगे, कोई मेरे साथ नहीं जायेगा, पर तू मेरे श्मशान पहुँचने के पहले ही मन लकड़ी के रूप में वहाँ पहुँच जायेगा। सब देखते रहेंगे और तू ही मेरे साथ जलेगा मेरे साथी। मैं तेरा ऋण कैसे चुकाऊँ देवता, मेरे सखा, मेरे पुत्र।

11. स्वस्तिवाचनम् -

व्याख्या - पुनः अक्षत-पुष्प हाथ में लें, यहाँ से स्वस्तिवाचन मंत्र के अंतिम पद का गायन होगा। भावना करें कि समस्त देव शक्तियाँ शुभ व मंगलकार्य के लिए वांछित शक्तियों का योग मिला कर अवांछनीय शक्तियों से रक्षा करें।

क्रिया- मंत्रों के साथ चारों दिशाओं में अक्षत के दाने छोड़ें।

मंत्र - **ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे। वसोमम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।**

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्पतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रेस्थो विष्णोः, स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता, वसवो देवता रुद्रा देवता, आदित्या देवता मरुतो देवता, विश्वेदेवा देवता, बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता, वरुणो देवता।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद्भद्रं तन्नऽ आ सुव।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु।

12. रक्षा विधानम् -

भावना - अक्षत हाथ में लेकर खड़े होकर खड़े हो जाएँ। दशों दिशाओं के दिग्पाल देवताओं को इस क्षेत्र की सुरक्षा के भाव के साथ अक्षत की वर्षा करते रहें।

मंत्र - **ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः, आग्नेयां गरुडध्वजः।**

दक्षिणे पद्मनाभस्तु, नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।।

पश्चिमो चैव गोविन्दो, वायव्यां तु जनार्दनः।

उत्तरे श्रीपती रक्षेत् ऐशान्यां हि महेश्वरः।।

उर्ध्वं रक्षतु धाता वो, ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।

अनुक्तमपि यत्स्थानम्, रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक्।।

अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमिसंस्थिताः।

ये भूता विघ्नकर्तारः, ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।

अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन, यज्ञकर्म समारभे।।

13. अग्नि स्थापनम् –

दो ईंट की वेदी बनाकर उसके उपर गाय के एक उपले पर कपूर रखें तथा चारों ओर से चार उपलों की झोपड़ीनुमा आकार बना लें। अग्नि को ब्रह्म का प्रतिनिधि मानकर वेदी पर अग्नि की प्रतिश्ठा करते हैं। अगरबत्ती को प्रज्वलित कर अग्नि का आह्वान करें।

मंत्र – **ॐ भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूम्ना, पृथिवीववरिम्णा, तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि, पृष्ठेग्नि मन्नादमन्नाद्यायादधे, अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां आसादयादिह।**

ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

14. गायत्री स्तवनम् –

दोनों हाथ जोड़कर भुवन भास्कर भगवान् सूर्य का ध्यान करें, दिव्यता पवित्रता के संचार की पुलकन का अनुभव करते हुए गायत्री स्तवन का गान करें। (एक या दो अंतरा)

मंत्र – 1. **शुभ ज्योति के पुंज अनादि अनुपम। ब्रह्माण्डव्यापी आलोककर्ता।**

दारिद्र्य दुःखभय से मुक्त कर दो, पावन बना दो हे देव सविता।

2. हे योगियों के शुभ मार्गदर्शक, सद्ज्ञान के आदि संचारकर्ता।

प्रणिपात स्वीकार कर लो हमारा, पावन बना दो हे देव सविता।।

15. मंत्राहुतियाँ–

1. गायत्री मंत्राहुतिः –

गायत्री मंत्र द्वारा सबके विचार शुद्ध पवित्र निर्मल बनें। श्रेष्ठ कार्य करने की ऐसी ही प्रेरणा हमें सदैव मिलती रहे, इस भाव के साथ दस आहुतियाँ अग्नि देवता को समर्पित करें। मध्यमा, अनामिका तथा अंगुष्ठ की सहायता से स्वाहा उच्चारण के साथ अपनी आहुति समर्पित करें।

मंत्र– **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। स्वाहा। इदं गायत्र्यै इदं न मम।**

2. तरुदेव मंत्राहुतिः – जिनके विवाह दिन,जन्म दिवस या जिनकी पुण्य स्मृति में आप ये वृक्ष लगा रहे हैं, परमपिता परमात्मा इस वृक्ष के त्याग, तप एवं पुण्य को उनकी रक्षा के लिए सदैव लहलहाता रहे, इस भाव के साथ महामृत्युंजय मंत्र से एक आहुति समर्पित करें।

मंत्र– **ॐ त्र्यंम्बकं यजामहे, सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान्, मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वाहा। इदं महामृत्युंजयाय इदं न मम।**

3. पृथ्वी गायत्री मंत्राहुतिः –

माँ पृथ्वी की एक आहुति समर्पित करें। भावना करें कि धरती माता के दिव्य संस्कार हमें प्राप्त हो। क्षेत्र, वर्ग आदि की संकीर्णता से हटकर विशालता, सहनशीलता हममें आए, इस भाव से एक आहुति समर्पित करें।

मंत्र- **ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्त्रमूर्त्यै धीमहि, तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात् स्वाहा। इदं पृथिव्यै इदं न मम।**

4. वरुण गायत्री मंत्राहुतिः -

भावना करें कि वरुण देवता की दृष्टि सदैव इस क्षेत्र में बनी रहे, जिससे रोपित किए जाने वाले पौधे सदैव विकसित हों, इस भाव के साथ एक आहुति समर्पित करें।

मंत्र - **ॐ जलबिम्बाय विद्महे, नीलपुरुषाय धीमहि, तन्नो वरुणः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं वरुणाय इदं न मम।**

5. सूर्यदेव मंत्राहुतिः - सूर्य ही वृक्षों - जीव जगत् के आधार हैं, वो अपनी स्वर्णिम किरणों से इन तरुपुत्रों की रक्षा एवं पोषण करें, इसी भाव से सूर्य गायत्री मंत्र से आहुति प्रदान करें।

मंत्र - **ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि, तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।**

16. पूर्णाहूतिः -

हमारे द्वारा लिए गए श्रेष्ठ संकल्प सदैव पूरे हों, इस भाव के साथ पूर्णाहुति समर्पित करें।

मंत्र - **ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते, पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।**

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत, वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा।

ॐ सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा। 3

17. तरुरोपणम् -

ध्यान दें, सभी भाई-बहिन तरु की थैली को फाड़ कर अलग कर लें। धरती माँ को कुण्ड मान कर पौधे को धरती माता के गोद में स्थान दें। सदा-सदा के लिए दिव्य प्राण और पर्जन्य की वर्षा वृक्ष देवता भूवासियों के लिए करते रहें, इस भाव से वृक्ष का रोपण कर चारों ओर से मिट्टी चढ़ा दें।

मंत्र - **ॐ तस्मात् सुबहवो वृक्षा रोप्याः श्रेयो ऽभिवाञ्छता। पुत्रवत परिपाल्याश्च ते पुत्रा धर्म्मतः स्मृताः।।**

किं धर्म्मविमुखैर्मर्त्यैःकेवलं स्वार्थहेतुभिः। तरुपुत्राः वरा ये तु परार्थैकानुवृत्तयः।।
ॐ वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्त्मन्या, समञ्जञ्छमिता न देवः।
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः, स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन॥ - यजु० २०.४५
ॐ मूले ब्रह्मा त्वचा विष्णुः,शाखाः रुद्रो महेश्वरः। पत्रे पत्रे देवानां, वृक्ष राजाय नमोस्तुते।।
दश कूप समो वापी, दश वापी समो ह्रदः। दश ह्रद समः पुत्रः, दश पुत्र समो द्रुमः।।

18. तरुसिंचनम् - शान्तिपाठः -

भविष्योत्तर पुराण के अनुसार जो कोई चतुर्मास में रोपित वृक्ष की जड़ों का सिंचन करता है, उसे दुर्लभ फल प्राप्त होते हैं। आपके द्वारा रोपित इस पौधे को सदैव आपका संरक्षण मिलता रहेगा। इस भाव के साथ आपके पास रखे पात्र के जल से रोपित तरु का सिंचन करें।

मंत्र – **ॐ यः करोति तरोर्मूले सेकं मासचतुष्टयम्।**

सोष्णिप तत् फलमाप्नोति श्रुतिरेशा सनातनी।।

19. तरु–स्तुति–

ओ तरु पर उपकारी.....

ओ तरु पर उपकारी, मन मुद मंगलकारी।

विषपायी शिव पालक पोषक, सब विधि मंगलकारी॥ 1॥

तारक तरु दश सुत सम मेरे, घोर नरक उद्धारी।

आतप, वर्षा, हेम, शरद ऋतु, शीत वसंत प्रभारी॥ 2॥

मुनि, गंधर्व, पित्तर, मानव, सब विधि हरिहर शिवधारी।

जलधि मित्र जल थल नभ जीवन, पोषक प्राण आधारी॥ 3॥

पत्र फूल फल कंद मूल जल, दाता सब सुखकारी।

प्राण प्रदाता जीवन दाता, श्वास श्वास आभारी॥ 4॥

ऋषि आरण्यक औ' वन दण्डक, निर्माता अधिकारी।

तुम शुभ अश्वत्थ बट पाकड़ सब, पाप पंक फल हारी॥ 5॥

हे शिवशंकरी, शुभग त्रिवेणी, पंचवटी सुखकारी।

वायुशोधक नभजल पोषक, धरा गगन शृंगारी॥ 6॥

ओ उपकारी, मंगलकारी, नरक उबारी।

श्वांस प्रभारी, गगन धरा शृंगारी, जाऊँ चरण बलिहारी॥ 7॥

ओ तरु पर उपकारी..... ॥

20. यज्ञ महिमा – अब यहाँ से यज्ञ महिमा गाई जायेगी। आप रोपित किए गए पुत्र रूपी तरु की दोनों हाथ जोड़कर परिक्रमा करें।

21. शान्तिपाठः – विसर्जनम् – सर्वत्र शान्ति ही शान्ति विराजे, इस भाव से शान्तिपाठ करें। फिर सभी परिजन थोड़े से अक्षत लेकर देवों को भाव भरी विदाई प्रदान करें।

मंत्र– **ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।**

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु।

ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम्।

इष्टकाम समृद्ध्यर्थं, पुनरागमनाय च॥ 2॥

22. सत्साहित्य वितरण–

23. तरु प्रसाद वितरण–

24. आवश्यक सूचनायें–।

*** *** ***